हिन्दी और विश्व हिन्दी सम्मेलन

प्रदीप कुमार पंवार
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की

देश को स्वाधीन हुए 77 और हिन्द को राजभाषा घोषित हुए 74 वर्ष हो गए, पर कड़वा सच यह है कि भारत राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी को वह पहचान नहीं दे पाया, जिसकी वह अधिकारिणी थी, लेकिन फिर भी हिन्दी के प्रचार–प्रसार एवं प्रयोग और उपयोगिता की बात करें, तो स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी विश्व की एक शक्तिशाली भाषा है। विश्व में हिन्दी प्रथम स्थान पर विराजमान है। विदेशों से लगभग पच्चीस से अधिक हिन्दी पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। अँग्रेजी की तुलना में हिन्दी चैनल एवं हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं की संख्या अधिक है। विश्व बाजार ने भी हिन्दी की बढ़ती ताकत को पहचाना है। हिन्दी विज्ञान एवं तकनीकी की भाषा पर खरी उतरी है। लगभग 45 से भी अधिक देशों के 143 विश्वविद्यालयों में तथा 600 से अधिक प्राथमिक–माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन–अध्यापन हो रहा है। हिन्दी की अपनी सहज सरल आत्मसाती प्रकृति एवं हिन्दी सेवियों, हिन्दी विद्वानों, समाज सुधारकों, हिन्दी की विभिन्न प्रचारक संस्थाओं, राजबल एवं सरकारी प्रयासों के साथ–साथ विश्व हिन्दी सम्मेलन को विश्व मंच पर हिन्दी को स्थापित करने तथा उसके व्यापक उदार रूप को उद्घाटित करने में विश्व हिन्दी सम्मेलनों की भूमिका अहम रही है।

मूल प्रेरणा एवं अवधारणा

विश्व हिन्दी सम्मेलन की अवधारणा कैसे साकार हुई? इसकी भी अपनी एक छोटी सी कहानी है। इस अवधारणा के मूल में मोरिसस के साहित्यकार सोमदत्त बुखारी का एक विचार कारणभूत है। उनके द्वारा लिखित गंगा की पुकार पुस्तक की भूमिका में अपने विचार रखते हुए उन्होने एक जगह लिखा कि हिन्दी परिवार अब एक भारतीय परिवार नहीं रहा। आज मॉरीशस में ही नहीं बल्कि भारत के बाहर कितने ही दूसरे स्थानों में हिन्दी का प्रचार–प्रसार हो रहा है। क्या इस वृहत्त परिवार का ख्याल किसी ने किया है? इस विचार से प्रभावित होकर दिनकर जी ने अखिल भारतीय हिन्दी संस्था के अध्यक्ष बाबू गंगाशरण सिंह और विदेश मंत्रालय के हिन्दी विशेषाधिकारी बच्चू सिंह जी से विचार–विमर्श कर तय किया कि विश्व सम्मेलन का आयोजन हो तथा उसका दायित्व गांधी जी की कर्म भूमि वर्धा स्थित राष्ट्रभाषा प्रचार समिति को सौंपा जाए। गंगाधर बाबू जी ने महाराष्ट्र सरकार के तत्कालीन राजस्व मंत्री तथा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अध्यक्ष श्री मधुकर राव चौधरी को सम्मेलन के दायित्व का भार वहन करने का अनुरोध किया। तत्पश्चात सितंबर 1973 में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा की कार्यकारिणी ने विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित करने का प्रस्ताव पारित किया। इस समिति के एक प्रतिनिधि मण्डल ने तत्कालीन प्रधानमंत्री माननीया श्रीमती इन्दिरा गांधी से मिलकर यह प्रस्ताव दिया। श्रीमती इन्दिरा जी की सहर्ष स्वीकृति एवं शुभकामनाओं के साथ सम्मेलन के आयोजन की गतिविधियां तेज कर दी गयीं। एक वर्ष की कठिन तपस्या के पश्चात 10 जनवरी, 1975 को नागपुर में प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन का सफल आयोजन हुआ।

विश्व हिन्दी सम्मेलनः एक सिंहावलोकन

प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन के आयोजन की राष्ट्रीय समिति के अध्यक्ष भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम श्री बी. डी. जत्ती थे। सुप्रसिद्ध मराठी साहित्यकार तथा नागपुर टाइम्स के संपादक अनंत गोपाल शेवड़े को महासचिव का पदभार प्रदान किया गया था। श्री लल्लन प्रसाद व्यास ने सहायक मंत्री पद का भार वहां किया था। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री माननीय श्री पी. वी. नायक को स्वागताध्यक्ष का दायित्व सौंपा गया था। माननीया प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी तथा

मॉरीशस के प्रधानमंत्री डॉ. शिवसागर रामगुलाम ने समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर उद्‌बोधन भाषण देते हुए काका साहब कालेलकर ने कहा कि हमने हिन्दी के माध्यम से स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व और स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भी सम्पूर्ण राष्ट्र की सेवा की है और अब इस हिन्दी के माध्यम से सारी मानवता की कुछ सेवा करने की और अग्रसर हो रहे हैं। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अपने उदघाटन भाषण में हिन्दी को विश्व की महान भाषा बताते हुए कहा कि हिन्दी करोड़ों लोगों की मातृभाषा है और करोड़ों लोग ऐसे हैं कि जो इसे दूसरी भाषा के रूप में प्रयोग करते हैं। इसका स्वर उन देशों में भी सुना जा सकता है, जहां हमारे देश के लोग कई पीढ़ियों पहले गए। विदेशों के हिन्दी विश्वविद्यालयों में भी, आज विद्वान लोग हिन्दी अध्ययन–अध्यापन में संलग्न हैं। तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री डॉ. कर्ण सिंह ने हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ में स्थान दिलाने की मांग की।

प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन

प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन दिनांक 10 से 14 जनवरी 1975 को नागपुर में आयोजित हुआ। इस सम्मेलन की मुख्य विषय वस्तु वसुधैव कुटुंबकम थी। इस सम्मेलन को सात विचार गोष्ठियों में विभाजित कर निम्नलिखित विषयों पर वैचारिक आदान–प्रदान किया गया थाः

1. हिन्दी की अंतर्राष्ट्रीय स्थिति।
2. विश्व मानव की चेतना भारत और हिन्दी।
3. आधुनिक युग एवं हिन्दी आवश्यकताएं और उपलब्धियां

दूसरे विषय पर विभिन्न दृष्टिकोण से विचार–विमर्श किया गया, जिसमें शाश्वत मूल्यों की खोज, जन संचार साधनों की भूमिका, विश्व मानव का मूल्यगत संकट तथा भाषा एवं लेखन के संदर्भ में युवा पीढ़ी की मानसिकता प्रमुख मुद्दे रहे। पाँच दिन तक चले गहन विचार–विमर्श के पश्चात सर्वसम्मति से निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किए गएः

- संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिया जाए।
- वर्धा में विश्व हिन्दी विद्यापीठ की स्थापना हो।
- विश्व हिन्दी सम्मेलनों को स्थायित्व प्रदान करने के लिए ठोस योजना बनाई जाए।

विश्व हिन्दी सम्मेलन के दिन सम्मेलन स्थल के पास ही एक समानान्तर सम्मेलन हुआ था। इसमें ऐसे साहित्यकारों ने भाग लिया था, जिनकी उपेक्षा की गयी थी और जो हिन्दी सम्मेलन की कुछ नीतियों से असंतुष्ट थे, इसमें अज्ञेय एवं नामवर सिंह जैसे दिग्गज साहित्यकार भी शामिल थे।

प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन की सफलता एवं लोकप्रियता ने इतना प्रभावित किया कि प्रथम सम्मेलन के ठीक अठारह माह बाद ही द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन मोरिसस में आयोजित किया गया।

द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन

द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन 28 से 30 अगस्त 1976 को पोर्टलुइस, मॉरीशस में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में भारत के 160, मॉरीशस के 100 तथा अन्य देशों के 29 प्रतिनिधियों एवं लगभग 40 देशों के हिन्दी विद्वानों ने निर्धारित निम्नलिखित मुख्य विषयों पर गंभीर विचार–विमर्श कियाः

1. हिन्दी की अंतर्राष्ट्रीय स्थितिः शैली और स्वरूप

2. जनसंचार के साधन और हिन्दी।
3. हिन्दी के प्रचार–प्रसार में स्वैच्छिक संस्थाओं की भूमिका
4. विश्व में हिन्दी के पठन–पाठन की समस्या।

तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन

तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन दिनांक 28 से 30 अक्तूबर, 1983 को दिल्ली में हुआ। इस सम्मेलन की आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़, कार्याध्यक्ष श्री मधुकर राव चौधरी (वर्धा के अध्यक्ष) और महासचिव श्री सिद्धेश्वर प्रसाद जी थे। इस सम्मेलन के उदघाटन भाषण में माननीया प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा जी ने कहा कि अब संयुक्त राष्ट्र संघ में भी हिन्दी को स्वीकार किया जाना चाहिए, किन्तु उससे भी बड़ी बात यह होगी कि भारत में मौलिक साहित्य इतना आगे बढ़े कि शोध तथा अन्वेषण का माध्यम बने और हिन्दी का साहित्य इतना उच्च कोटि का हो कि संसार के लोगों को हिन्दी न जानने का अभाव महसूस हो। श्री वियोगी हरि ने अपने उद्‌बोधन भाषण में कहा कि हिन्दी को सब प्रेम से सीखते हैं, क्योंकि यह प्रेम की भाषा है, इसका किसी के साथ कोई विरोध नहीं है।

विभिन्न देशों के लगभग 250 प्रतिनिधियों सहित वरिष्ठ हिन्दी विद्वानों एवं भारत के सारे प्रतिनिधियों ने तीन दिन तक निम्न विषयों पर गहन चिंतन–मनन कियाः

- अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी के प्रसार एवं विकास की संभावनाएं और प्रयास।
- भारत के सांस्कृतिक संबंध और हिन्दी।
- मानव मूल्यों की स्थापना में हिन्दी की भूमिका

उक्त विषयों के अतिरिक्त हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को प्रभावित–प्रेरित–परिवर्तित करने वाले राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय रूप से संबन्धित महत्वपूर्ण विषयों पर पंद्रह समानान्तर संगोष्ठियों का आयोजन भी हुआ, जिसमें हिन्दी के प्रचार–प्रसार में शैक्षिक संस्थाओं का योगदान तथा पत्रकारिता के सशक्त माध्यम हिन्दी विषय पर बल देकर हिन्दी को ज्ञान–विज्ञान, व्यापार तथा नई प्रोद्यौगिकी की भाषा बनाने का आग्रह किया गया।

समापन समारोह में श्रीमती महादेवी वर्मा ने विभिन्न भारतीय भाषाओं के लगभग चालीस विद्वानों को सम्मानित किया। उन्होने भारत में ही हिन्दी की स्थिति सुधारने पर बल देते हुए कहा कि हम अक्सर राष्ट्र संघ की बातें करते हैं। बिना अंतर्राष्ट्रीय हुए हम जी ही नहीं सकते परन्तु अंतर्राष्ट्रीय वही हो सकता है, जिसकी राष्ट्र में जड़ें हों, जिसकी राष्ट्र में जड़ नहीं है वह क्या अंतर्राष्ट्रीय होगा।

चौथा विश्व हिन्दी सम्मेलन

चौथा विश्व हिन्दी सम्मेलन दिनांक 2 से 4 दिसंबर 1993 को पोर्टलुइस, मॉरीशस में संपन्न हुआ। इस सम्मेलन में भारत सहित विभिन्न देशों के 200 प्रतिनिधि एवं मॉरीशस के अनेक हिन्दी प्रेमियों के बीच निम्नलिखित विषयों पर विचार–विमर्श किया गयाः

- विश्व में हिन्दी प्रचार–प्रसार की स्थिति एवं समस्याएं
- विश्व में हिन्दी भाषा तथा साहित्य की उपलब्धियाँ और भावी स्वरूप।
- प्रवासी भारतीयों की सामाजिक एवं सांस्कृतिक अश्मिता बनाए रखने में हिन्दी का योगदान
- विश्व में हिन्दी शिक्षण तथा अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में हिन्दी।

उपरोक्त विषयों पर विचार–विमर्श के साथ–साथ विगत तीन विश्व हिन्दी सम्मेलनों में पारित संकल्पों को पुनः दोहराते हुए अग्रलिखित संकल्प पारित किए गएः

- भारत में विश्व हिन्दी विद्यापीठ तथा मॉरीशस में विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना की जाए।
- सभी प्रतिनिधियों द्वारा अपने देश की सरकारों के माध्यम से हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनाने के गंभीर प्रयास किए जाएं।
- जिन देशों में हिन्दी अध्ययन–अध्यापन की सुविधा है, वहाँ हिन्दी पीठ की स्थापना की जाए।
- भारत सरकार विदेशों से प्रकाशित समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकें प्रकाशित करने में सहायता प्रदान करे।

पाँचवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन

पाँचवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन दिनांक 4 से 8 अप्रैल, 1996 में पोर्ट ऑफ स्पेन, (त्रिनिदाद) में आयोजित हुआ। इस सम्मेलन की मुख्य विषय वस्तु अप्रवासी भारतीय और हिन्दी थी। इस सम्मेलन में निम्नलिखित विषयों पर विचार विमर्श किया गया थाः

- विश्वव्यापी भारतवंशी समाज हिन्दी को अपनी संपर्क भाषा के रूप में स्थापित करेगा।
- मॉरीशस में एक अंतः शासकीय समिति का गठन किया जाए।
- सभी देशों, विशेषकर जिन देशों में अप्रवासी भारतीय बड़ी संख्या में है, उनकी सरकारें अपने–अपने देशों में हिन्दी के अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था करें।
- हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनाने के लिए राजनीतिक समर्थन और योगदान एकत्र किया जाए।

छठा विश्व हिन्दी सम्मेलन

छठवां विश्व हिन्दी सम्मेलन 14 से 18 सितंबर, 1999 को लंदन में संपन्न हुआ। इस सम्मेलन की मुख्य विषय वस्तु ''हिन्दी और भावी पीढ़ी'' थी। राजभाषा हिन्दी के स्वर्ण जयंती वर्ष में आयोजित छठवें विश्व हिन्दी सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व तत्कालीन विदेश मंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे सिंधिया ने किया था। सम्मेलन में लगभग 700 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। उक्त सम्मेलन में निम्नलिखित संकल्प पारित किए गएः

- विश्व भर में हिन्दी के प्रचार प्रसार प्रयोग–सृजन में समन्वय के लिए महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय एक अंतर्राष्ट्रीय केंद्र की भूमिका निभाए।
- विदेशों में हिन्दी का अध्ययन–अध्यापन, पाठ्यक्रम निर्धारण, पाठ्य पुस्तक निर्माण, अध्यापक प्रशिक्षण आदि की व्यवस्था भी विश्वविद्यालय करे।
- मॉरीशस सरकार अन्य हिन्दी प्रेमी सरकारों से परामर्श कर शीघ्र विश्व हिन्दी सचिवालय स्थापित करे।
- हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ में मान्यता दी जाए।
- नई पीढ़ी में हिन्दी को लोकप्रिय बनाने के लिए आवश्यक पहल की जाए।
- भारत सरकार विदेशों में स्थित अपने राजदूतों को निर्देश दे कि विद्यालयों में एक भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण की व्यवस्था उपलब्ध करवाएं।

- विज्ञान एवं तकनीकी प्रसारण एवं संचार की अद्यतन तकनीकों से हिन्दी को सुसज्ज एवं सक्षम बनाने के लिए भारत सरकार एक केंद्रीय एजेंसी स्थापित करे।

सातवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन

सातवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन 5 से 9 जून, 2003 को पारामारिबो (सूरीनाम) में हुआ था। इसकी मुख्य विषय वस्तु ''विश्व हिन्दी–नई शताब्दी की चुनौतियाँ'' थी। इस सम्मेलन का नेतृत्व तत्कालीन विदेश राज्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह ने किया था। इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि पोलैंड के सुप्रसिद्ध भाषाविद प्रो. बृस्की एवं उद्घाटक सूरीनाम के राष्ट्रपति श्री आर. आर. वेनेटिशयान थे। इस सम्मेलन में निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किए गएः

- विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन हो।
- अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन हो।
- विदेशी विद्वानों की परिचय पुस्तिका का प्रकाशन किया जाए।
- विदेशी विश्वविद्यालयों में हिन्दी पीठ की स्थापना की जाए।
- भारतीय विश्वविद्यालयों में हिन्दी के पाठ्यक्रमों में विदेशी विद्वानों की रचनाएँ शामिल की जाएं।
- कैरेबियन हिन्दी परिषद की स्थापना एवं हिन्दी के प्रचार हेतु वेबसाइट की स्थापना हो।

आठवां विश्व हिन्दी सम्मेलन

आठवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन 13 से 15 जुलाई 2007 को न्यूयार्क (अमेरिका) में आयोजित हुआ। इस सम्मेलन की मुख्य विषय वस्तु "विश्व मंच और हिन्दी" थी। इस सम्मेलन में निम्न विषयों पर विचार विमर्श किया गयाः

- हिन्दी भाषा और साहित्यः विविध आयाम
- साहित्य में अनुवाद की भूमिका
- हिन्दी का बाल साहित्य
- हिन्दी के प्रचार प्रसार में सूचना प्रौद्योगिकी एवं फिल्मों की भूमिका।
- वैश्वीकरण, मीडिया और हिन्दी
- विदेशों में हिन्दी सृजन
- देवनागरी लिपि
- हिन्दी युवा पीढ़ी और ज्ञान–विज्ञान
- देश–विदेश में हिन्दी शिक्षणः समस्याएँ और समाधान।

नौवां विश्व हिन्दी सम्मेलन

नौवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन 22 से 24 सितंबर 2012 को जोहन्स्बर्ग (दक्षिण अफ्रीका) में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में 30 देशों के 200 प्रतिनिधियों ने प्रतिभाग किया। इस सम्मेलन की मुख्य विषय वस्तु ''भाषा की अस्मिता और हिन्दी का वैश्विक संदर्भ'' थी। इस सम्मेलन का आयोजन भारत के विदेश मंत्रालय, हिन्दी शिक्षा संघ (दक्षिण अफ्रीका) तथा अन्य संगठनों द्वारा किया गया था। इस सम्मेलन में ''गगनांचल'' नमक विश्व हिन्दी पत्रिका का विशेष संस्करण तथा ''सम्मेलन स्मारिका'' का विमोचन किया गया। सम्मेलन के मुख्य विषय पर विचार–विमर्श के लिए भारत तथा अन्य देशों के प्रतिनिधियों, हिन्दी विद्वानों, शिक्षकों, शोधकर्ताओं ने प्रतिभाग किया। इस सम्मेलन में निम्न विषयों पर चर्चा की गयीः

- महात्मा गांधी की भाषायी दृष्टि
- हिन्दी तथा आधुनिक तकनीकें
- हिन्दी के प्रसार में महाकाव्यों की भूमिका
- हिन्दी के प्रसार में विदेशी विद्वानों का योगदान
- जनसंचार माध्यम एवं हिन्दी।

दसवां विश्व हिन्दी सम्मेलन

दसवां विश्व हिन्दी सम्मेलन 10 से 12 सितंबर 2015 को भोपाल (भारत) में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में 50 देशों के 2000 प्रतिनिधियों ने प्रतिभाग किया। इस सम्मेलन का उदघाटन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा किया गया। इस सम्मेलन की मुख्य विषय वस्तु ''हिंदी जगत विस्तार एवं संभावनाएं'' थी। इस सम्मेलन में निम्न विषयों पर चर्चा की गयीः

- विदेश नीति में हिंदी
- प्रशासन में हिंदी
- विज्ञान क्षेत्र में हिंदी
- संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी
- विधि एवं न्याय क्षेत्र में हिंदी और भारतीय भाषाएं
- बाल साहित्य में हिंदी
- अन्य भाषा–भाषी राज्यों में हिंदी
- हिंदी पत्रकारिता और संचार माध्यमों में भाषा की शुद्धता
- गिरमिटिया देशों में हिंदी
- विदेशों में हिंदी शिक्षण–समस्याएं और समाधान
- विदेशियों के लिए भारत में हिंदी अध्ययन की सुविधा
- देश और विदेश में प्रकाशनः समस्याएं एवं समाधान

ग्यारहवां विश्व हिन्दी सम्मेलन

ग्यारहवां विश्व हिन्दी सम्मेलन 18 से 20 अगस्त 2018 को पोर्ट लुईस (मॉरीशस) में किया गया। यह सम्मेलन भारत के पूर्व माननीय प्रधानमंत्री स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी को समर्पित रहा। विश्व हिन्दी सम्मेलन के उद्घाटन वक्तव्य में तत्कालीन विदेश मंत्री श्रीमति सुषमा स्वराज ने वाजपेयी जी को हिन्दी का प्रतिनिधि बताते हुए कहा कि उन्होंने संयुक्त राष्ट्र में पहली बार हिन्दी में संबोधन करते हुए इस भाषा को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई थी। मॉरीशस के प्रधानमंत्री और तत्कालीन विदेश मंत्री श्रीमति सुषमा स्वराज ने विश्व हिन्दी सम्मेलन में एक स्मारिका और दो डाक टिकटों को भी जारी किया।

बारहवां विश्व हिन्दी सम्मेलन

बारहवां विश्व हिन्दी सम्मेलन 15 से 17 फरवरी 2023 को नाडी (फिजी) में संपन्न हुआ। इस सम्मेलन का आयोजन भारत सरकार के विदेश मंत्रालय एवं फिजी सरकार के सहयोग से किया गया। इस सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व विदेश मंत्री श्री एस. जयशंकर ने किया। इस सम्मेलन का मुख्य विषय ''हिन्दी पारम्परिक ज्ञान से कृत्रिम मेधा तक'' था।